भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 466
बुधवार, 22 जुलाई, 2026 को उत्तर दिए जाने के लिए

मिशन मौसम का कार्यान्वयन

†**466. श्रीमती माला राज्यलक्ष्मी शाह:**
श्री अरूण गोंविल:
श्री आलोक शर्मा:
श्री विनोद लखमशी: चावड़ा:
श्री भोजराज नाग:
श्री कोटा श्रीनिवास पूजारी:
श्री विश्वेश्वर हेगड़े कागेरी:
श्री आशीष दुबे:
श्री राहुल सिंह लोधी:
डॉ. संजय जायसवाल:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) मिशन मौसम के शुरू होने के बाद से इसके तहत प्रमुख बुनियादी ढांचे और तकनीकी उन्नयन सहित की गई प्रगति का ब्यौरा क्या है;

(ख) मिशन के तहत डॉप्लर मौसम रडार, ऊपरी-वायु अवलोकन प्रणालियों और अन्य मौसम निगरानी बुनियादी ढ़ांचे की तैनाती की स्थिति क्या है;

(ग) चक्रवात, भारी वर्षा और अन्य अत्यधिक विषम मौसम की घटनाओं के पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनी में सुधार के लिए किए गए उपायों का ब्यौरा क्या है;

(घ) मिशन के तहत पंचायत-स्तरीय मौसम पूर्वानुमान प्राप्त करने और जलवायु सेवाओं को मजबूत करने की रूपरेखा का ब्यौरा क्या है;

(ङ) उत्तर प्रदेश के मेरठ और हापुड़ जैसे प्रमुख कृषि क्षेत्रों में अचानक आने वाले तूफानों, ओलावृष्टि और भारी बारिश की प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली स्थापित किए जाने की संभावित समय- सीमा क्या क्या है; और

(च) क्या देश में राज्यस्तरीय मौसम केंद्र स्थापित करने की कोई योजना है और यदि हाँ , तो राज्य/ संघ राज्यक्षेत्र-वार विशेष रूप से मध्य प्रदेश में भोपाल का तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क)-(ख) मिशन मौसम माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 14 जनवरी 2025 को लॉन्च किया गया था, इसका लक्ष्य राष्ट्र को 'मौसम के लिए तैयार और जलवायु-स्मार्ट' बनाना था। मिशन मौसम का उद्देश्य पृथ्वी प्रणाली दृष्टिकोण को साकार करने के लिए पृथ्वी प्रणाली प्रेक्षणों के विभिन्न घटकों को सुदृढ़ बनाना है, ताकि सभी लोगों तक निर्बाध मौसम और जलवायु सेवाएं पहुंचाने के लिए एक पूर्व चेतावनी प्रणाली प्रदान की जा सके। इस स्कीम का उद्देश्य देश के मौसम और जलवायु संबंधी प्रेक्षण, समझ, मॉडलिंग और पूर्वानुमान को तीव्रता से बेहतर बनाना है, जिससे बेहतर, अधिक उपयोगी, सटीक और समय पर सेवाएं उपलब्ध हो सकें। इस मिशन के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं:

- अत्याधुनिक मौसम निगरानी प्रौद्योगिकियां एवं प्रणालियां विकसित करना।
- बेहतर कालिक एवं स्थानिक सैंपलिंग एवं कवरेज के साथ हायर-रिजोल्यूशन वायुमंडलीय प्रेक्षण को कार्यान्वित करना।
- एडवांस्ड इंस्ट्रूमेंट पेलोड्स के साथ सुसज्जित नेक्स्ट-जनरेशन रडार, विंड प्रोफाइलर्स, तथा सैटेलाइट तैनात करना।
- उन्नत उच्च-निष्पादन कंप्यूटिंग (एचपीसी) प्रणालियों को कार्यान्वित करना।
- मौसम एवं जलवायु प्रक्रियाओं के प्रति हमारी समझ को बेहतर बनाना तथा पूर्वानुमान क्षमताओं में सुधार करना।
- उन्नत पृथ्वी प्रणाली मॉडल्स तथा डेटा-आधारित पद्धतियाँ विकसित करना, जिसमें एआई/एमएल का उपयोग शामिल है।
- मौसम के प्रभावी प्रबंधन हेतु प्रौद्योगिकियों एवं प्रोटोकॉल का निर्माण करना।
- अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी के लिए एक अत्याधुनिक डिसीजन सपोर्ट सिस्टम (डीएसएस) तथा प्रसार प्रणाली स्थापित करना।
- क्षमता निर्माण एवं अनुसंधान सहयोगों को सुदृढ़ बनाना।

प्रेक्षण नेटवर्क और मॉडलिंग क्षमता की वर्तमान स्थिति इस प्रकार है:

- भारत मौसम विज्ञान विभाग वर्तमान में देश भर में आईएमडी तथा अन्य एमओईएस संस्थानों और इसरो द्वारा संचालित 50 डॉपलर मौसम रडार के नेटवर्क से डेटा प्राप्त करता है। पूरे देश में 29 सी-बैंड डीडब्ल्यूआर, 45 एक्स-बैंड डीडब्ल्यूआर और 12 एस-बैंड डीडब्ल्यूआर की तैनाती के साथ वर्तमान नेटवर्क में वर्तमान प्रचालनरत परियोजनाओं के माध्यम से विस्तार किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, बेहतर उन्नत मौसम संसूचन, मॉडलिंग और वायुमंडलीय गतिकी का अध्ययन करने के लिए देश भर में 19 विंड प्रोफाइलर सिस्टम (डब्ल्यूपीएस), 25 माइक्रोवेव रेडियोमीटर (एमडब्ल्यूआर) और 60 नए जीपीएस रेडियोसोंडे स्टेशन स्थापित करने की योजना है। ये सभी नई प्रेक्षण प्रणालियां वर्ष 2028 तक चालू कर दी जाएंगी।

- इस परियोजना के अंतर्गत, विभिन्न वैश्विक और क्षेत्रीय संख्यात्मक मौसम पूर्वानुमान (एनडब्ल्यूपी) मॉडलिंग प्रणालियां कार्यान्वित की गई हैं, और निर्बाध रूप से लघु अवधि, मध्यम अवधि और विस्तारित अवधि पूर्वानुमान सृजित करने के लिए प्रचालित की गई हैं। वैश्विक मॉडलिंग प्रणालियों के दो अलग-अलग ढांचे हैं जो भारत मौसम विज्ञान विभाग की वैश्विक पूर्वानुमान प्रणाली (जीएफएस) और एनसीएमआरडब्ल्यूएफ नोएडा की मिथुन मॉडलिंग प्रणालियों पर आधारित हैं। दोनों मॉडल होरिजोंटल रिजोल्यूशन 12 किमी के साथ रियल टाइम में रन करते हैं। नई भारत पूर्वानुमान प्रणाली (भारतएफएस) ब्लॉक-स्तर और पंचायत स्तरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए 6 किमी के बहुत उच्च रिजोल्यूशन पर प्रचालनरत है। इस तरह के हाई-रिजोल्यूशन मॉडलों के लिए कंप्यूटेशनल सपोर्ट प्रदान करने और उन्हें रियल टाइम में नियमित रूप से रन करने के लिए कंप्यूटिंग सुविधाओं में भी महत्वपूर्ण वृद्धि की गई है ताकि विशाल डेटा को एकीकृत किया जाए और हाई रिजोल्यूशन पर मेसोस्केल, क्षेत्रीय और वैश्विक मॉडल रन किए जाएं। हाल ही में, एचपीसी सिस्टम "अरुणिका" और "अर्क" प्रणालियों के साथ, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने वर्ष 2025 में अपनी कुल कंप्यूटिंग शक्ति को 28 पेटा फ्लॉप तक बढ़ा लिया है, जो वर्ष 2014 में 6.8 पेटा फ्लॉप्स की पिछली क्षमता से काफी अधिक है।

- साथ ही, उन्नत पृथ्वी प्रणाली मॉडल्स तथा डेटा-आधारित पद्धतियाँ विकसित करने समेत एआई/एमएल के उपयोग हेतु आगे योजनाएँ भी हैं। वर्तमान में तीन एआई आधारित वैश्विक मॉडल नियमित रूप से प्रचालनरत हैं ताकि गंभीर मौसम का पूर्वानुमान करने के लिए पूर्वानुमानकर्ताओं को मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) अनुप्रयोगों और उपकरणों को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय संगठन के मौसम वैज्ञानिकों द्वारा निगरानी और प्रेक्षण प्रोसेसिंग के विभिन्न पहलुओं जैसे नाउकास्टिंग टूल, डाउनस्केल्ड शहरी पूर्वानुमान आदि पर स्वदेशी रूप से विकसित किया गया है।

(ग) आपदा पूर्व चेतावनी प्रणालियों में सुधार के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा विभिन्न पहलें की गई थीं। उठाए गए महत्वपूर्ण कदम निम्नानुसार हैं:

- प्रेक्षण नेटवर्क का विस्तार।
- स्वदेशी, प्रौद्योगिकी-संचालित और नागरिक-केंद्रित मौसम पूर्वानुमान प्रणाली का विकास, जो आपदा तैयारियों को सुदृढ़ करती है और पूरे भारत में सार्वजनिक सुरक्षा में सुधार करती है (उपर्युक्त बिंदु 2 और 3)। भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा इन-हाउस विकसित किया गया डिसीजन सपोर्ट सिस्टम (DSS) "आत्मनिर्भर भारत" पहल के अंतर्गत आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ा कदम है। परिणामस्वरूप, पिछले दशक की तुलना में हाल के दशकों में सभी प्रकार की गंभीर मौसमी घटनाओं के पूर्वानुमान की सटीकता में 40 प्रतिशत सुधार हुआ है।
- जिला स्तर पर प्रभाव-आधारित पूर्वानुमान और जोखिम-आधारित चेतावनियां प्रसारित की जा रही हैं, जिससे प्राधिकरणों को चक्रवात, भारी वर्षा, आंधी, लू और शीत लहरों के विरुद्ध समय पर निवारक कार्रवाई करने के लिए सशक्त बनाया जा रहा है।
- भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा विकसित "मौसमग्राम" (हर हर मौसम, हर घर मौसम), एक अद्वितीय नागरिक-केंद्रित मंच है जो ग्रामीण स्तर तक स्थान-विशिष्ट, अति-स्थानीय मौसम पूर्वानुमान प्रदान करता है। "मौसमग्राम" आगामी 36 घंटों के लिए हर घंटे का पूर्वानुमान, आगामी पांच दिनों के लिए हर तीन घंटे का पूर्वानुमान और दस दिनों तक हर छह घंटे का पूर्वानुमान प्रदान करता है। उपयोगकर्ता पिन कोड या स्थान के नाम से खोज करके या राज्य, जिला, ब्लॉक और ग्राम पंचायत का चयन करके मौसम की जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। यह उपयोगकर्ता-अनुकूल प्रणाली अति-स्थानीय पूर्वानुमानों तक आसान पहुंच सुनिश्चित करती है, जिससे नागरिकों को उनके विशिष्ट स्थान के अनुरूप सटीक और यथा-समय मौसम की नवीनतम सूचना प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- जिला स्तर पर जलवायु जोखिम और सुभेद्यता मानचित्रों का विकास (https://imdpune.gov.in/hazardatlas/index.html)
- मौसम पूर्वानुमान और चेतावनियों के लिए भू-स्थानिक सेवाओं का विकास (https://imdgeospatial.imd.gov.in/)
- भारत मौसम विज्ञान विभाग उन एजेंसियों में से एक है जो गंभीर मौसम की चेतावनी के लिए सीएपी अलर्ट जारी करती है। इन सीएपी अलर्ट को एसएमएस के साथ-साथ एनडीएमए द्वारा विकसित सचेत ऐप के माध्यम से प्रसारित किया जाता है। इन सीएपी फीड्स का उपयोग ऐप्पल, गूगल और जीएमएएस द्वारा मौसम संबंधी चेतावनियों के प्रसार के लिए भी किया जा रहा है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने एक एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (एपीआई) विकसित किया है जिसका उपयोग विभिन्न निजी और सार्वजनिक संगठनों द्वारा विभिन्न हितधारकों द्वारा विकसित मोबाइल ऐप सहित विभिन्न मीडिया के माध्यम से आम जनता के लिए आईएमडी के पूर्वानुमानों और चेतावनियों को आगे प्रसारित करने के लिए किया जा रहा है।

- भारत मौसम विज्ञान विभाग मौसम संबंधी चेतावनियों के प्रसार के लिए विभिन्न मोबाइल ऐप विकसित किए हैं जैसे मौसम पूर्वानुमान और चेतावनियों के लिए मौसम ऐप, कृषि मौसम सेवाओं के लिए मेघदूत ऐप, बिजली गिरने संबंधी चेतावनी के लिए दामिनी ऐप (आईआईटीएम द्वारा विकसित), मौसम पूर्वानुमान और चेतावनियों के लिए उमंग ऐप (एमईआईटीवाई द्वारा विकसित)।

(घ) दूरदराज और संवेदनशील क्षेत्रों में मौसम की जानकारी की स्थानीय प्रासंगिकता और अंतिम-छोर तक कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए, भारत मौसम विज्ञान विभाग ने अन्य मंत्रालयों के सहयोग से निम्नलिखित प्रमुख पहल की हैं:

- पंचायती राज मंत्रालय के सहयोग से, आईएमडी ने पंचायत मौसम सेवा पोर्टल विकसित किया है, जो ई-ग्राम स्वराज (https://egramswaraj.gov.in), मेरी पंचायत ऐप, ई-मानचित्र और मौसमग्राम (https://mausamgram.imd.gov.in) के माध्यम से पंचायत स्तर पर मौसम पूर्वानुमान प्रदान करता है।
- पंचायत सदस्यों, वार्ड सदस्यों और पंचायत सचिवों के मोबाइल नंबरों को पंचायत मौसम सेवा पोर्टल के साथ एकीकृत किया गया है, जिससे ग्राम पंचायत स्तर पर आगे प्रसारित किए जाने के लिए व्हाट्सएप के माध्यम से मौसम पूर्वानुमान और कृषि मौसम संबंधी एडवाइजरी का समय पर प्रसार संभव हो सके।
- आईएमडी मौसम पूर्वानुमान और कृषि मौसम एडवाइजरीज को अंतिम छोर तक प्रसारित करने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय के कृषि सखी और पशु सखी नेटवर्क का भी लाभ उठाता है।
- आईएमडी ने 373 जिलों में 7,300 से अधिक किसान जागरूकता कार्यक्रम (एफएपी) आयोजित किए हैं, जिससे लगभग 3.67 लाख किसान लाभान्वित हुए हैं, जिसमें 83 संभावित जिले शामिल हैं, ताकि जलवायु रोध क्षमता वाली कृषि को बढ़ावा दिया जाए और मौसम आधारित एडवाइजरी सेवाओं का प्रभावी उपयोग हो सके।
- मिशन मौसम के तहत, आईएमडी ने मौसम विश्लेषण, एडवाइजरी सृजन और जलवायु के प्रति रोध क्षमता वाली कृषि योजना को सुदृढ़ बनाने के लिए स्थान-, फसल- और फसल-चरण-विशिष्ट एडवाइजरी और मौसम संकल्प (व्यवस्थित कृषि मौसम विज्ञान एनालिटिक्स, ज्ञान और एडवाइजरी इनेबलिंग प्लेटफार्म) के सृजन हेतु केएएलपी (स्थान-विशिष्ट मौसम पूर्वानुमान के आधार पर कृषि एडवाइजरी) विकसित किया है।

(ङ) भारत सरकार ने पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के संस्थानों और आईएमडी के माध्यम से सभी कालिक और स्थानिक पैमानों को निर्बाध तरीके से कवर करते हुए प्रचालन मौसम विज्ञान सेवाओं की निरंतर निगरानी और कठोर समीक्षा की है। हाल के समय में, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय मौसम संबंधी पूर्व-चेतावनी प्रणाली को आधुनिक बनाने में काफी प्रगति हुई है, इसके तहत भारत मौसम विज्ञान विभाग की बहु-जोखिम पूर्व-चेतावनी प्रणाली को कार्यान्वित किया गया है, जिसमें डीआईएस-आधारित डिसीजन सपोर्ट सिस्टम की अत्याधुनिक तकनीक शामिल है, जिसका उद्देश्य यह है कि "ऐसी कोई मौसमी घटना न हो जिसका पता न लगाया जा सके, या जिसका पूर्वानुमान न किया जा सके"। इस लक्ष्य के प्राथमिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए, भारत सरकार की 'अर्बन मीटियोरोलॉजी' और 'मिशन मौसम' योजनाओं के तहत उत्तर प्रदेश में मौसम विज्ञान संबंधी प्रेक्षण अवसंरचना को लगातार सुदृढ़ बनाया जा रहा है, ताकि 'मिशन मौसम' के माध्यम से बहुपक्षीय कार्यपद्धति के साथ प्रेक्षण कमियों को पूरी तरह से दूर किया जा सके, जिससे राज्य के खास तौर पर संवेदनशील समूहों और समुदायों (जिनमें मेरठ और हापुड़ जैसे प्रमुख कृषि क्षेत्र भी शामिल हैं) के लिए आपदा जोखिम कम करने के उपायों की तैयारी और प्रभाविता में वृद्धि हो, यह काम स्थानीय और राज्य सरकार के संबंधित विभागों और एजेंसियों के साथ मिलकर किया जा रहा है, ताकि खराब मौसम (जैसे आंधी-तूफान, ओलावृष्टि, भारी बारिश आदि) से होने वाले विभिन्न तरह के प्रभावों और चुनौतियों का सामना किया जा सके।

इसके अतिरिक्त, भारत सरकार द्वारा आईएमडी और अन्य एमओईएस संस्थानों के माध्यम से प्रभावी पूर्व चेतावनी प्रणाली, हीट-एक्शन प्लान, क्षेत्रीय आपदा प्रबंधन योजनाओं और जिला-स्तरीय तैयारियों के माध्यम से जलवायु रोध-क्षमता को सुदृढ़ बनाने के लिए विभिन्न प्रयास किए गए हैं। उत्तर प्रदेश राज्य के लिए लू, आंधी, अत्यधिक वर्षा और बाढ़ जैसी चरम मौसमी और जलवायु घटनाओं की निगरानी और ट्रैक करने और हाल ही में राज्य की आपदा तैयारियों और मौसम पूर्वानुमान में सुधार हेतु एक प्रभावी पहल के रूप में, आईएमडी, भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार ने संयुक्त पहल की है और मौजूदा प्रेक्षण नेटवर्क को बढ़ाने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। मेरठ जिले में 29 स्वचालित उपकरणों (05-एडब्ल्यूएस + 24-एआरजी) का एक नेटवर्क और हापुड़ जिले में 13 स्वचालित उपकरणों (03-एडब्ल्यूएस + 10-एआरजी) का नेटवर्क (सभी तापमान, आर्द्रता और वर्षा सेंसर्स से सुसज्जित) पहले से ही स्थापित और आरंभ किया जा चुका है, इसके अतिरिक्त इसमें सीसीएसयू (रामगढ़ी) में 01 विभागीय वेधशाला, एसवीपीयूएटी (मोदीपुरम) में 01 एग्रोमेट वेधशाला, मेरठ जिले में 04 डीआरएमएस स्टेशन (मेरठ तहसील, मेरठ वेधशाला, सरधना और मवाना) और 03 स्वचालित उपकरण (01-एडब्ल्यूएस-सीसीएसयू + 02-एआरजी-सरधना और मवाना) और हापुड़ जिले में 02 डीआरएमएस स्टेशन (गढ़मुक्तेश्वर और हापुड़) भी शामिल हैं। उपर्युक्त नेटवर्क के अलावा दिल्ली (आया नगर, पालम और लोधी रोड) में 3 डॉपलर मौसम रडारों का एक मौजूदा सुदृढ़ नेटवर्क है, और पटियाला और लैंसडाउन प्रत्येक में 01 डॉपलर मौसम रडार का एक मौजूदा सुदृढ़ नेटवर्क है जो मेरठ और हापुड़ सहित उत्तर-पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गरज के साथ तूफान, बिजली गिरने, ओलावृष्टि, भारी वर्षा की घटनाओं जैसे गंभीर मौसमी तत्वों की निगरानी और पूर्वानुमान की जरूरतों को पूरा करता है। इसके अतिरिक्त, उक्त क्षेत्र में कृषि क्षेत्र की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 01 एग्रो-एडब्ल्यूएस एसवीपीयूएटी, मेरठ में स्थापना के अग्रिम चरण में है। प्रेक्षण नेटवर्क में इस सुधार ने बहुत मदद हुई है, और आगामी विकास से मौसम मापदंडों की रियल टाइम में निगरानी, और अधिक विस्तृत और हाइपरलोकल पैमाने पर गंभीर मौसम की घटनाओं का पता लगाने में महत्वपूर्ण मदद मिलेगी, और इन प्रेक्षण प्रणालियों के पूर्ण संवर्द्धन के साथ आईएमडी की निर्बाध पूर्वानुमान प्रणाली मेरठ और हापुड़ जिलों सहित उत्तर प्रदेश में गंभीर मौसम और जलवायु खतरों के प्रति संवेदनशीलता को कम करने के लिए एक सुदृढ़ तंत्र तैयार करेगा।

(च) भारत मौसम विज्ञान विभाग के 8 प्रादेशिक मौसम केंद्र (आरएमसी) हैं और 25 मौसम केंद्र (एमसी) हैं जो तत्संबंधी प्रादेशिक मौसम केंद्र के प्रत्यक्ष नियंत्रण में हैं, जिसकी सूची नीचे दी गई है:

क्र.सं.	**प्रादेशिक मौसम केंद्र / मौसम केंद्र**	**राज्य / संघ राज्य क्षेत्र को प्रदान की जाने वाली सेवाएँ**
1	प्रादेशिक मौसम केंद्र, नई दिल्ली	दिल्ली, चंडीगढ़, राजस्थान, पंजाब, और हरियाणा
2	प्रादेशिक मौसम केंद्र, जम्मू	संघ राज्य क्षेत्र/जम्मू और कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश
3	प्रादेशिक मौसम केंद्र, लखनऊ	उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड
4	प्रादेशिक मौसम केंद्र, गुवाहाटी	असम और देश के अन्य पूर्वोत्तर क्षेत्र
5	प्रादेशिक मौसम केंद्र, मुंबई	महाराष्ट्र, गोवा, गुजरात के हिस्से

6	प्रादेशिक मौसम केंद्र, कोलकाता	पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार, झारखंड, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
7	प्रादेशिक मौसम केंद्र, चेन्नई	तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल, पुदुचेरी और लक्षद्वीप
8	प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर	मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र के हिस्से
9	मौसम केंद्र, बेंगलुरु	कर्नाटक
10	मौसम केंद्र, हैदराबाद:	तेलंगाना
11	मौसम केंद्र, तिरुवनंतपुरम	केरल
12	मौसम केंद्र, अमरावती	आंध्र प्रदेश
13	मौसम केंद्र, अगरतला	त्रिपुरा
14	मौसम केंद्र, ईटानगर	अरुणाचल प्रदेश
15	मौसम केंद्र, शिलॉन्ग	मेघालय
16	मौसम केंद्र, आइजोल	मिजोरम
17	मौसम केंद्र, कोहिमा	नगालैंड
18	मौसम केंद्र, इंफाल	मणिपुर
19	मौसम केंद्र, भुबनेश्वर	ओडिशा
20	मौसम केंद्र, गंगटोक	सिक्किम
21	मौसम केंद्र, पटना	बिहार
22	मौसम केंद्र, रांची	झारखंड
23	मौसम केंद्र, श्री विजया पुरम	अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह
24	मौसम केंद्र, अहमदाबाद	गुजरात, दमन, दादरा नगर हवेली और दीव
25	मौसम केंद्र, गोवा	गोवा
26	मौसम केंद्र, रायपुर	छत्तीसगढ़
27	मौसम केंद्र, भोपाल	मध्य प्रदेश
28	मौसम केंद्र, चंडीगढ़	हरियाणा, पंजाब और संघ राज्य क्षेत्र चंडीगढ़
29	मौसम केंद्र, देहरादून	उत्तराखण्ड
30	मौसम केंद्र, जयपुर	राजस्थान
31	मौसम केंद्र, शिमला	हिमाचल प्रदेश
32	मौसम केंद्र, श्रीनगर	जम्मू एवं कश्मीर
33	मौसम केंद्र, लेह	लद्दाख

अतः, सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की राज्य/संघ राज्य क्षेत्र स्तरीय मौसम सेवाएं इन 8 प्रादेशिक मौसम केंद्र और 25 मौसम केंद्र द्वारा कवर की जाती हैं। मध्य प्रदेश के भोपाल में पहले से ही एक मौसम केंद्र (एमसी) है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न राज्यों में मौसम विज्ञान वेधशालाएं स्थापित हैं, जहां से नियमित मौसम प्रेक्षण लिए जाते हैं।

*****